VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
J
P 19 JAN 2020
RECEIVED

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1401)

Name of Candidate	SUNIL KUMAR		
Medium Eng./Hindi	Hindi	**Registration Number**	729226
Center	Jaipur	**Date**	19/1/2020

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	10	
5	10	
6	10	
7	10	
8	10	
9	10	
10	10	
11	15	
12	15	
13	15	
14	15	
15	15	
16	15	
17	15	
18	15	
19	15	
20	15	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **ENGLISH & HINDI**
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. Give an account of the contributions made by Indians to the field of mathematics in ancient and medieval times. **(150 words) 10**

प्राचीन एवं मध्य काल में गणित के क्षेत्र में भारतीयों के योगदानों का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

प्राचीनकाल से ही भारत विज्ञान व गणित में विश्व का अग्रणी देश था। गणित के क्षेत्र में योगदान देने वाले भारतीय निम्न थे -

प्राचीनकाल - 1. आर्यभट्ट - यह गुप्तकाल विद्वान था। जिसने 'आर्यभट्टीय' में गणितीय अवधारणाओं का विशद निरूपण किया है

A. दशमलव प्रणाली में शून्य की खोज

B. π (पाइ) का अतिशुद्ध मान

C. रेखागणितीय सिद्धांतो का प्रतिपादन

2. बौधायन - बौधायन सूत्र में रेखागणित की अवधारणाओं को स्पष्ट किया। इनका प्रमेय वर्तमान मे पाइथागोरस प्रमेय के नाम से जाना जाता है।

3. भास्कराचार्य - अपनी पुस्तक लीलावती में बीजगणित का विशद विवरण दिया। इनकी पुत्री लीलावती भी गणितज्ञ थी।

4. वैदिक काल में यज्ञ हेतु वेदियों के निर्माण के लिए गणितीय सूत्रों व प्रमेयों का बखूबी विकास हुआ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मध्यकाल - 1. सवाई जयसिंह - ये गणित व ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने समय मापने की यंत्र, सूर्य घड़ी, वेधशालाओं में गणितीय सिद्धांत प्रयोग किए। इन्होंने यूक्लिड की पुस्तक का संस्कृत में अनुवाद करवाया।

* विभिन्न विश्वविद्यालय जैसे नालन्दा, तक्षशिला व विक्रमशिला आदि में गणित मुख्य विषय के रूप में अध्ययन व अनुसंधान का विषय था।

स्पष्ट है कि गणित के ज्ञान हेतु अरब व यूरोपवासी सदैव भारत से सीखते रहे हैं। आइंसटीन के शब्दों में 'शून्य की खोज के लिए हम सदैव भारत के ऋणी रहेंगे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. Female poet-saints played a significant role in the bhakti movement. Discuss. (150 words) 10

महिला संत कवियों ने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चर्चा कीजिए।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत में अलवार व नयनार संतो ने की थी। तब से लेकर 15वीं सदी तक अनेक महिला संत कवि हुईं।

* अलवार संतो में से प्रमुख आण्डाल प्रसिद्ध कवियत्री थी।

* उत्तर भारत में 'राजस्थान की राधा' मीराबाई का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने 'सत्यभामा नु रूसणु', मीराबाई की पदावलियां जैसे ग्रंथ लिखे। 'म्हारो तो गिरधर गोपाल दूजो न कोए' जैसे गीत भक्ति धारा की माला बन गए।

* कश्मीरी शैव भक्त लाल देद का काम उल्लेखनीय है।

* सहजोबाई, गवरीबाई आदि ने अपनी कृतियों से भक्ति आंदोलन को ओज बढ़ाया

* भक्ति आंदोलन मुख्यतः प्रेम व संगीत पर आधारित था जिसके लिए अनगिनत महिला संतो ने गीत लिखे व गाए

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जिससे लोक साहित्य व भाषाओं का विकास हुआ।

समीक्षा - उपर्युक्त कवियत्रियों के होते हुए भी महिला संत सीमित संख्या में ही भागीदारी कर पाई क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज को यह मंजूर नहीं था। मीराबाई इसका सटीक उदाहरण है जिन्हे रोकने के लिए उनके प्रियजनों ने बार-बार विष देने तथा बदनाम करने की कोशिश की

स्पष्ट है कि महिला संत कवियों ने प्रत्यक्ष से अधिक परोक्ष रूप से भक्ति आंदोलन में योगदान दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. Give an account of Jain architecture that developed in various parts of the country during different periods. **(150 words) 10**

देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न अवधियों के दौरान विकसित जैन स्थापत्य कला का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

जैन स्थापत्य का विकास महावीर स्वामी के निर्वाण पश्चात शुरु हुआ जो संपूर्ण देश में फैला। -

* इसका सर्वाधिक संकेन्द्रण गुजरात, महाराष्ट्र व राजस्थान में हुआ।

* चन्द्रगुप्त मौर्य के काल से बिम्बिसार तक इसे संरक्षण मिला। यद्यपि मौर्य काल मे यह बौद्ध स्थापत्य जितना पल्लवित न हो सका।

* मेगुती का जैन मंदिर शुरुआती साक्ष्यो मेंसे

* अजन्ता व ऐलोरा गुफाओं में जैन विषयो को भी शामिल किया गया था।

* राजस्थान के देलवाडा के विमलशाही व लुणवसही मंदिर 10-11 वीं सदी में बने जिनमे पार्श्वनाथ व नेमिनाथ की मूर्तियां है।

* जैन स्थापत्य में सफेद संगमरमर का प्रयोग, तीर्थंकरों को सुकोमल व रत्नजड़ित दिखाने पर बल दिया गया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

* चित्तौड़गढ़ में जैन कीर्तिस्तम्भ का निर्माण राजपूत काल में हुआ जहां जैन मूर्तियां बनाई गई।

* मथुरा, सारनाथ में भी मौर्योत्तर काल में महावीर स्वामी की मूर्तियां बनाई गई

* देश के विभिन्न भागों में दिगम्बर जैन मूर्तियां, जैन मंदिर व तीर्थस्थल पाए जाते हैं

स्पष्ट है कि जैन स्थापत्य का शैव वैष्णव व बौद्ध की भांति विकास नहीं हो सका क्योंकि इसे राजाओं का संरक्षण नहीं मिला। फिर भी पश्चिमी भारत में इसकी सादगीपूर्ण कला देखी जा सकती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. Curzon's domestic and foreign policies were motivated by the urge to further strengthen the British position in India. Discuss. **(150 words) 10**

कर्जन की घरेलू एवं विदेशी नीतियाँ, भारत में अंग्रेजों की स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता से प्रेरित थीं। चर्चा कीजिए।

लार्ड कर्जन प्रतिक्रियावादी वायसराय था जिसने अंग्रेजी साम्राज्य को सुदृढ़ करने के लिए निम्न कदम उठाए -

घरेलू नीतियाँ -

1. बँगाल का विभाजन - 1905

के समय बँगाल भारत सर्वाधिक प्रगतिशील व राष्ट्रवादी क्षेत्र था जहाँ क्रांतिकारी राष्ट्रवादी व पढ़े-लिखे नवयुवक सर्वाधिक थे। अतः अंग्रेजी राज के लिए खतरा समझकर कर्जन ने प्रशासनिक कारणों का बहाना से बंगाल को दो भागों में विभाजित किया।

यद्यपि उसकी चाल उल्टी पड़ी बंगभंग व स्वदेशी आंदोलन उठ खड़े हुए किंतु धार्मिक विभाजन के बीज जरूर रोप दिए। 1911 में विभाजन रद्द करना पड़ा

2. 1902 का विश्वविद्यालय अधि॰ - इसमें कर्जन ने सुधार के नाम पर वि॰ वि॰ में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ाया किंतु ताकि राष्ट्रवादी गतिविधियों पर अंकुश लगे।

3. प्रेस पर प्रतिबंध लगाए।

4. मुस्लिम लीग की स्थापना में सहयोग किया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विदेशी नीतियां - कर्जन के समय रूस से भारत की ओर खतरा उत्पन्न हो रहा था इसलिए अफगानिस्तान में हस्तक्षेप कर बफर स्टेट के रूप में प्रयोग किया।

मध्य एशिया व समुद्र में एकछत्र राज हेतु भारतीय सेना का प्रयोग किया।

अतः कर्जन की नीतियाँ उसके राष्ट्र के हितों के अनुकूल थी जिससे वह अंग्रेजी राज को भारत में स्थायी बनाना चाहता था। किंतु इसने राष्ट्रीय आंदोलन के उदय में परोक्ष योगदान दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. The Communal Award was seen not only as an attack on national unity but also inimical to the interests of the depressed classes. Discuss. Also, highlight how the Poona Pact sought to address some concerns in this regard. **(150 words) 10**

सांप्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) को न केवल राष्ट्रीय एकता पर प्रहार के रूप में देखा गया, अपितु यह दलित वर्गों के हितों के भी प्रतिकूल था। चर्चा कीजिए। साथ ही, रेखांकित कीजिए कि किस प्रकार पूना पैक्ट ने इस संबंध में कुछ चिंताओं का समाधान करने का प्रयास किया।

16 Aug 1932 को अंग्रेज प्रधानमंत्री रैम्जेमैकडोनाल्ड ने सांप्रदायिक पंचाट की घोषणा की। इसमे निम्न प्रावधान थे -

1. दलितो के लिए पृथक निर्वाचन मण्डल की व्यवस्था।

2. दलितो को आरक्षण की व्यवस्था

3. वस्तुतः यह 1909 से शुरू 'बांटो व राज करो' की नीति का अगला कदम था

इस गांधीजी यरवदा जेल में थे उन्होने इसे सुनते ही अनशन शुरू कर दिया उनके अनुसार इससे हिंदू समाज सदैव के लिए टूट जाता।

वस्तुतः भीमराव अम्बेडकर इसकी मांग कर रहे थे। गांधी व अम्बेडकर के मध्य 14 सितम्बर 1932 को पूना समझौता

हुआ जिसमें साम्प्रदायिक पंचाट को खारिज कर दिया गया किंतु दलितों के विधानमण्डल में 151 सीटों को आरक्षित कर दिया गया।

इसके बाद गांधीजी ने अपना संपूर्ण ध्यान दलितोत्थान पर देने का वचन दिया। जिसके तहत

- हरिजन सेवक संघ
- अखिल भारतीय अस्पृश्यता निवारण लीग
- हरिजन समाचार पत्र
- पदयात्राओं का आयोजन किया।

उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सरकार राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए 'बांटो व राज करो' नीति के तहत चल रही थी। इस प्रावधान से राष्ट्रीय एकता को नुकसान होता ही किंतु दलित भी सदा के लिए पृथक वर्ग बन जाते जिससे समावेशीकरण को धक्का पहुँचता।

यद्यपि कई दलित नेताओं ने पूना समझौते को दलितों के साथ धोखा बताया किंतु 1932 से आजादी तक व बाद में संविधान में दलितोत्थान के सराहनीय प्रयास किए गए हैं

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. Given the important role played by the press in the formation and propagation of nationalist ideology, the British sought to curb the freedom of the press at various points during the freedom movement. Elaborate.

(150 words) 10

राष्ट्रवादी विचारधारा के निर्माण एवं प्रचार-प्रसार में प्रेस द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, अंग्रेजों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई अवसरों पर प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। सविस्तार वर्णन कीजिए।

प्रेस अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। राष्ट्रीय आंदोलन के समय इसकी भूमिका को निम्न बिंदुओ से देखा जा सकता है

- तिलक के मराठा, केसरी पत्रों ने राष्ट्रवाद की भूमिका बनाई।
- नील दर्पण, सोमप्रकाश आदि पत्रों ने किसान आंदोलनो की आवाज दी।
- हरिजन, हिन्दू, अमृत बाजार पत्रिका, भारतमाता, गदर, बाम्बे क्रानिकल आदि ने सरकार के स्याह पक्ष को उजागर किया।

इसे देखते हुए ब्रिटिश इस पर अंकुश लगाने का प्रयास करते रहे

1. 1823 का सेंसरशिप एक्ट – किसी भी समाचार पत्र को पहले लाइसेंस लेकर तथा कलेक्टर की अनुमति से ही चलाया जा सकता था।

इसे चार्ल्स मेटकॉफ ने हटाया अतः उसे 'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता' कहा जाता है

2. 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट - यह सर्वाधिक घातक था जिसमे देशी भाषा के समाचार पत्रों को निषिद्ध कर दिया गया इसके डर से 'अमृत बाजार पत्रिका' रातोंरात अंग्रेजी अखबार में बदल गया।

3. कर्जन का 1904 का प्रेस एक्ट - इसमें सरकार के विरुद्ध लिखने पर भारी जुर्माने का प्रावधान था।

स्पष्ट है कि प्रेस ने राष्ट्रवाद के उदय, दलितोत्थान, क्रांतिकारी आतंकवाद को बहुत बल दिया जिसे रोकने की कोशिश सरकार द्वारा की गई। गांधीवादी आंदोलनो में प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया जाता था किंतु भारत छोड़ो आंदोलन के समय उषा मेहता आदि ने भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना कर आजादी मे योगदान दिया।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

7. The peasant awakening seen in 1930s in India was largely a result of the combination of particular economic and political developments of that period. Discuss. **(150 words) 10**

भारत में 1930 के दशक में अवलोकित कृषक जागरूकता, व्यापक तौर पर उस अवधि की विशिष्ट आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रमों के सम्मिश्रण का परिणाम थी। चर्चा कीजिए।

भारत में कृषक आंदोलनों का लंबा इतिहास रहा है। 1930 के दशक में विशिष्ट स्थितियां थी जिन्होने कृषक जागरूकता बढ़ाई।-

1. होमरूल लीग आंदोलन का स्पष्ट प्रभाव अवध के किसानों पर पड़ा। जहां बाबा रामचन्द्र, झिंगुरी पाल आदि ने 'अवध किसान सभा' की स्थापना की।

2. 1927 मे स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय कृषक कांग्रेस की स्थापना हुई।

3. साम्यवाद इस समय तक भारत मे बस गया था। 1925 'कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया' की स्थापना हुई।

4. गांधीजी कृषक समुदाय को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ रहे थे। चंपारण, खेड़ा, बारदोली, मोपला इसके उदाहरण है

5. प्रथम विश्वयुद्ध व आर्थिक मंदी की आहट ने कृषकों का शोषण बढ़ा दिया था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. असहयोग आंदोलन में मालगुजारी व लगान न देने का निश्चय हुआ।

7. दक्षिण भारत में सूदखोरों व महाजनों के विरुद्ध जगह-जगह आंदोलन हुआ।

स्पष्ट है कि इन आर्थिक व राजनीतिक कारकों के सम्मिश्रण से कृषक जागरूकता बढ़ी तथा वे राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे बड़े भाग के रूप में शामिल हुए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

8. Though the upsurge by the ratings of the Royal Indian Navy was suppressed, it is seen as an event which marked the end of British rule in India. Discuss. **(150 words) 10**

यद्यपि, रॉयल इंडियन नेवी के नाविकों के विद्रोह को दबा दिया गया था, तथापि इसे एक ऐसी घटना के रूप में देखा जाता है जो भारत में ब्रिटिश शासन के अंत का प्रतीक था। चर्चा कीजिए।

1946 में रॉयल जहाज 'तलवार' के नौसैनिको ने विद्रोह कर दिया जो तेजी से 10000 नौसेनिको सहित कराची तक पहुँच गया था। इसे निम्न कारणो से ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की आखिरी कील समझा जाता है -

* वह सेना ही थी जिस पर भरोसा कर अंग्रेजो ने भारत व भारत से बाहर साम्राज्य खड़ा किया। इसका भरोसा टूट चुका था।

* विशेषकर समुद्र पर शासन इंग्लैण्ड की ताकत थी।

* आजाद हिंद फौज़ ने भारतीय सैनिको को प्रखर भूमिका के लिए प्रेरित कर दिया था

* भारत छोड़ो आंदोलन एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन था जिसमे ब्रिटिशर भारतीय जनता की ताकत को देख चुकी थी। अतः पहली बार ऐसा हुआ था कि 'आम जनता व सैनिको का खून साथ बहा था।'

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ब्रिटिश शासन ने नौसैनिकों के साथ भेदभाव किया। उनके विरोध को दबाया गया जिससे व्यापक विद्रोह हुआ। जिसे दबाने के लिए इंग्लैण्ड किसी भी हद तक जाने को तैयार था। इसलिए राष्ट्रीय नेताओं की समझाइश से इसका अंत हुआ।

स्पष्ट है कि भारत छोड़ो आंदोलन आजाद हिंद फौज जैसे प्रयासों ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए तैयार पहले ही कर दिया था किंतु नौसैनिक विद्रोह ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी थी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. The story of India's freedom struggle cannot be complete without recognizing the role that many leaders of North East India played during the time. Discuss. **(150 words) 10**

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी उस दौर में उत्तर-पूर्व भारत के अनेक नेताओं द्वारा निभाई गई भूमिका को मान्यता प्रदान किए बिना पूर्ण नहीं हो सकती है। चर्चा कीजिए।

भारत की आजादी में देश के सभी भागों की जनता व नेताओं का योगदान था। जिसमें उत्तर-पूर्व भारत का उल्लेख आवश्यक है-

* स्वदेशी आंदोलन के समय से ही इस क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना का संचार हो रहा था। लोगो ने विदेशी माल का बहिष्कार किया।

* सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय नागालैंड की रानी गैडिनल्यू ने 13 वर्ष की आयु में आजादी का झंडा उठाया जिसे नेहरू ने 'रानी' की उपाधि देते हुए कहा कि 'एक दिन राष्ट्र इनके योगदान को जरूर याद करेगा।'

* नागालैण्ड, मणिपुर क्षेत्र में जकार्ड पंथ के नेता राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ा रहे थे।

* आजाद हिंद फौज के भारत में शुरूआती सफलता के लिए उत्तर-पूर्व भारत का सहयोग उल्लेखनीय था। मणिपुर, नागालैण्ड के लड़ाको ने बखूबी साथ दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

* स्थानीय कवियों ने राष्ट्रवादी गीत लिखे।

* महिलाओं का योगदान देश के अन्य क्षेत्रों से बढ़कर था।

स्पष्ट है कि उत्तर-पूर्व भारत में राष्ट्रीय आंदोलन बखूबी चल रहा था। गांधीजी के आह्वान को लोगों ने अपने अनुसार पालन किया। वन क्षेत्र अधिकारों के लिए संघर्षरत रहे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. Giving an account of revolutionary activities carried outside India to get freedom from the British colonial rule, highlight the limitations of such activities. **(150 words) 10**

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु भारत से बाहर की गई क्रांतिकारी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए, इस प्रकार की गतिविधियों की सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

क्रांतिकारी देशभक्तों ने भारत से बाहर रहकर भी आजादी का प्रयास किया। प्रमुख गतिविधियां निम्न हैं -

1. श्याम जी कृष्ण वर्मा की 'इंडिया हाउस' पहली संस्था थी।

2. मैडम भीकाजी कामा 'मदर ऑफ इंडियन रिवोल्यूशन' कहा जाता है पेरिस मे रहकर क्रांतिकारियों को सहयोग दिया। अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस मे भाग लिया।

3. 1913 में गदर पार्टी की स्थापना अमेरीका मे की गई। शीर्षक था। 'अंग्रेजी राज का दुश्मन' लाला हरदयाल, रामचन्द्र, अजीतसिंह आदि प्रमुख नेता थे।

4. 1915 मे अफगानिस्तान राजा महेन्द्र प्रताप द्वारा अस्थायी सरकार की स्थापना।

5. रेशमी रुमाल षड्यंत्र

6. साम्यवादियों के षडयंत्र - मेरठ, कानपुर

7. मदनलाल द्वारा भारत सचिव की हत्या

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

* सबसे उल्लेखनीय योगदान आजाद हिंद फौज का रहा जिसमे द्वितीय विश्वयुद्ध के भारतीय युद्धबंदी सैनिक थे जिन्हें मोहनलाल रास बिहारी बोस व सुभाष बाबु ने फौज मे बदल दिया। सिंगापुर मे इसकी स्थापना हुई।

अतः भारत के सपूतो ने सरकार के डर से भारत के बाहर से जर्मनी, फ्रांस, अमेरीका, कनाडा, रूस व जापान मे रहकर अनेक क्रांतिकारी गतिविधियो को पोषित किया। प्रशिक्षित किया। अंत मे आजादी की बलि पर बलिदान दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

11. The architecture of Pallava kingdom has a distinctive style comprising of cave temples, monolithic temples and structural temples. Elaborate with examples. **(250 words) 15**

पल्लव स्थापत्य कला एक विशिष्ट शैली है, जिसमें गुहा मंदिर, एकाश्म मंदिर और संरचनात्मक मंदिर सम्मिलित हैं। उदाहरण सहित सविस्तार वर्णन कीजिए।

पल्लव दक्षिण भारत के 7 वी सदी के शासक थे। जिन्होने स्थापत्य मे उल्लेखनीय योगदान दिया।

पल्लव काल मे क्रमश: निम्न चार शैलियाँ विकसित हुई -

1. महेन्द्रवर्मन शैली
2. नरसिंह वर्मन "
3. राजसिंह शैली
4. अपराजित शैली

1. महेन्द्रवर्मन शैली मे शुरुआती एकाश्मक व छोटे मंदिरों का निर्माण हुआ।
   - प्रवेश द्वारो का निर्माण किया गया
   - एकल मंदिर बने
   - गुहा मंदिर बने।

2. नरसिंहवर्मन प्रथम के काल को मामल्ल शैली के नाम से भी जाना जाता है।
   उदा० महाबलीपुरम के मंदिर
   विशेषता — संरचनात्मक मंदिर बने
   — छोटी-छोटी गतिशील मूर्तिकला।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- मंदिरो में रथ बनाए गए।
- खुली चट्टानों पर मूर्तिकला - अर्जुन की तपस्या
  - गंगावतरण
- गोपुरम बनाए जाने लगे।

3. राजसिंह शैली - इसमें मंदिरों के प्रदक्षिणा पथ खुले व बड़े बने।
- लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग
- पृथक व स्पष्ट मंदिर बने
- शिखर अधिक पिरामिडाकार हुए

4. अपराजित शैली - यह पल्लव कला के अवसान का समय था। यद्यपि कलाकारों में परिपक्वता आई थी किंतु भव्यता व विशालता को नहीं बनाया जा सका।

पल्लव कालीन स्थापत्य कला में मंदिर, मूर्तिकला, चट्टानों को काटकर बनाई संरचनाएं दिखती हैं जो कालक्रम अनुसार अधिक परिपक्व हुई। वस्तुतः पल्लवों ने दक्षिण भारतीय शैली की नींव रखी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी नींव को आधार बनाकर चोल शासकों ने आश्चर्यजनक विकास किया। राजराज 1 का बृहदेश्वर मंदिर व राजेन्द्र चोल का गंगैकोण्डचोल पल्लव कला का ही उत्तरोत्तर रूप है।

स्पष्ट है कि पल्लव स्थापत्य द्रविड़ शैली का मुख्य अंग है जिन्होंने दक्षिण भारत का विशिष्ट स्थान पाया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

12. Though the contact between the Greeks and ancient Indians was for a brief period, its impact was fairly wide in range. Elaborate. **(250 words) 15**

यद्यपि यूनानियों एवं प्राचीन भारतीयों के मध्य एक संक्षिप्त अवधि तक ही संपर्क रहा था, तथापि इसका प्रभाव काफी व्यापक था। सविस्तार वर्णन कीजिए।

भारतीय संस्कृति सदैव समावेशीकरण की रही है। प्राचीनकाल में यूनानी सभ्यता भी समृद्ध सभ्यता थी जिससे दोनो सभ्यताओं में आदान-प्रदान कई रूपों में हुआ।

* सिंधु घाटी सभ्यता के समय ही भारत व यूनान के मध्य व्यापारिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध थे।

* यूनानी शासक मीनाण्डर की मुद्राएं कई जगहों से मिली है जैसे बैराठ, भरहुत आदि

* मौर्यकाल में चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी शासक को हराया और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया

* यूनानी राजदूत डायमेकस मौर्य दरबार में रहा।

* मेगस्थनीज की इंडिका ने भारतीयों व यूनानियों को नजदीक लाने के महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

* मूर्तिकला में मौर्योत्तर काल का महत्त्वपूर्ण स्थल गांधार में यूनानी प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

* बुद्ध की मूर्तियों में - मूंछयुक्त बुद्ध
  - जूते पहने बुद्ध
  - पारदर्शी वस्त्र
  - प्रभामण्डल का प्रयोग
  - गठीला शरीर

आदि यूनानी देवता अपोलो की भाँति कल्पना कर बनाया गया।

* यूनानी दार्शनिक प्लेटो व अरस्तु के दर्शन का भारतीय दर्शन पर प्रभाव देखा जा सकता है।

* भारत का गणित व विज्ञान का ज्ञान यूनान के रास्ते ही संपूर्ण यूरोप में फैला।

* भारत के कई बौद्ध दार्शनिक यूनान में दूत बनकर गए।

स्पष्ट है कि भारत -यूनान के मध्य समृद्ध सभ्यता का आदान -प्रदान हुआ जिसके कई प्रमाण मिलते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

13. The subject of Indian folk art paintings is as diverse as the Indian cultural milieu itself. Elucidate. **(250 words) 15**

भारतीय लोक चित्रकला का विषय उतना ही विविधतापूर्ण है जितना कि स्वयं भारतीय सांस्कृतिक परिवेश। स्पष्ट कीजिए।

भारत विविधताओ वाला देश है। यहां के निवासियो ने अपने भावो को चित्रो मे बखूबी अभिव्यक्त किया है।

लोक चित्रकलाओ में निम्न मुख्य है:-

1. मिथिला - बिहार क्षेत्र मे

2. मधुबनी - बिहार - उत्तर प्रदेश, नेपाल तीला क्षेत्र

3. मांडना - उत्तर भारत मे शुभ अवसरो पर

4. झांकी चित्रकला - राज० के नाथद्वारा के वैष्णव मंदिरो मे कपडो पर कृष्ण की जीवन लीलाएं

5. पट चित्रकला आदि

विषय :- → रामायण, महाभारत के विषय
- भगवान कृष्ण की लीलाएं (मधुबनी)
- ज्यामितीय आकृतियां
- प्रकृति चित्रण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उल्लेखनीय है कि भारत के विविध भागों में लोक चित्रकला के विविध रूप देखे जा सकते है दक्षिण भारत में ओणम, पोंगल आदि अवसरों पर दीवारों व फर्श पर चित्रकारी आकर्षक होती है

असम में बिहू, पूर्वी भारत में दुर्गापूजा, छठ पूजा आदि विषयों में अनेक चित्र बनते है जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को बताते है

अतः लोकचित्रकला कोई सीमा में नहीं बंधती है। लोकमानस के मन के भावों का चित्रण कर विभिन्न रूप दिखा रही है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

14. The short-sightedness of Congress, Jinnah's ambitions and British amorality – all played their part in the partition of India. Discuss. **(250 words) 15**

कांग्रेस की अदूरदर्शिता, जिन्ना की महत्वाकांक्षाएँ एवं अंग्रेज़ों की नीतिभ्रष्टता - सभी ने भारत के विभाजन में अपनी भूमिका निभाई। चर्चा कीजिए।

15 अगस्त 1947 को आजादी के जश्न के साथ भारत ने विभाजन की विभीषिका भी झेली। जिसके निम्न कारण जिम्मेदार थे

1. कांग्रेस की अदूरदर्शिता :- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे बड़ी पार्टी थी किंतु किन्ही कारणों से वे सांप्रदायिकता को नहीं रोक सके।

- 1916 के लखनऊ समझौते में सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकारना

- 1920 में खिलाफत के मुद्दे को समर्थन कर धार्मिक प्रश्न को महत्व दे दिया

- अपरोक्ष रूप से हिंदूवादी प्रथाओं का समर्थन किया जैसे बंग-भंग आंदोलन मे दुर्गा पूजा, गंगा स्नान, क्रांतिकारियों द्वारा प्राचीन भारत से प्रेरणा ढूंढना, शिवाजी व प्रताप को राष्ट्रवादी तथा अकबर व औरंगजेब को विदेशी समझना
- गणपति उत्सव, शिवाजी उत्सव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- 1937 के प्रांतीय चुनावों में जिन्ना के संयुक्त प्रांत में मिलकर सरकार बनाने के प्रस्ताव को ठुकराना संभवत सबसे बड़ी गलती थी।

- अंतिम समय में जिन्ना को अत्यधिक महत्त्व देना
- संतुष्टीकरण की नीति।

② जिन्ना की महत्त्वाकांक्षाएं - जिन्ना ने दो राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर पाकिस्तान निर्माण के लिए सभी उपाय अपनाए।

- प्रत्यक्ष कारवाई दिवस (16 अगस्त 1946) सबसे भयानक रूप था
- मुस्लिम लीग को ही मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि मानना
- शिमला ~~समझौता~~ वार्ता न मानना

③ अंग्रेजों की नीतिभ्रष्टता - 1857 की क्रांति के बाद 1870 अंग्रेज मुस्लिमो को दुश्मन समझते रहे किंतु इसके बाद बढ़ते राष्ट्रवाद को देख इन्होंने 'बांटो व राज करो' नीति अपनाई।-

1. सैय्यद अहमद खान व शिक्षित मुसलमानों को भड़काना
2. मुस्लिम लीग की स्थापना में सहयोग।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- 1909 में सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली का विषैला बीज बोना।

- 1905 में बंगाल का धार्मिक आधार पर विभाजन

- अंत तक देशी रजवाड़ों व मुस्लिमों के हितों की रक्षा कर अंग्रेज भारत के कई टुकड़े करना चाहते थे।

स्पष्ट है कि भारत विभाजन में उपर्युक्त सभी कारकों का योगदान रहा किंतु हिंदू कट्टरपंथियों ने भी आग में घी का काम किया था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. Given the specific nature and character of the British colonial state, the Indian national movement gradually evolved its strategy and tactics over the course of time. Analyse. **(250 words) 15**

ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य की विशिष्ट प्रकृति एवं चरित्र को देखते हुए, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने समय के साथ उत्तरोत्तर अपनी रणनीति एवं कार्यनीति का विकास किया। विश्लेषण कीजिए।

1885 मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही भारत मे संगठित राष्ट्रीय आंदोलन शुरू हुआ। जिसका क्रमिक विकास हुआ -

(1) 1885-1905 का काल :- इस काल मे ब्रिटिश सरकार विधि का शासन, न्यायप्रियता का ढोंग कर रही थी। इसलिए शुरूआती राष्ट्रवादी ब्रिटिश सरकार के अधीन रहते हुए ही भारत में सुधारो की मांग करते रहे। इनमे दादाभाई नौरोजी, बदरूद्दीन तैयबजी, फिरोजशाह मेहता प्रमुख थे।

नौरोजी ने इंग्लैण्ड मे भारत की स्थिति बताने के लिए ब्रिटिश इंडिया सोसा० की स्थापना की।

- ब्रिटिश शासन के आर्थिक शोषण की आलोचना - धन के बहिर्गमन सिद्धांत से की।

- मांगे व मांगो का तरीका संवैधानिक व प्रार्थना स्वरूप था।

(2) 1905-1917 का काल :- 1905 मे बंगाल विभाजन, 1909 मे सांप्रदायिक निर्वाचन जैसे

कदमों से ब्रिटिश सरकार का स्वरूप व प्रकृति उजागर हुई। कर्जन की नीतियां उल्लेखनीय रही

अतः उग्र राष्ट्रवादी व गरमपंथियों ने कमान संभाली। यद्यपि दोनों ही कांग्रेस से बाहर हो गए

⇒ क्रांतिकारी आतंकवाद का पहला चरण 1905-1915
बंगाल में अनुशीलन समिति, महाराष्ट्र में अभिनव भारत तथा पंजाब में गदर पार्टी आदि उभरे।

⇒ गरमपंथियों में लाल-पाल-बाल ने नरमपंथियों की पद्धति की आलोचना 'भिक्षावृत्ति' कहकर की।

(3) गांधीवादी युग (1917-47) :- गांधीजी पहले ब्रिटिश सरकार के समर्थक थे किंतु जलियांवाला बाग हत्याकांड, रोलेट एक्ट, प्रथम विश्व युद्ध के बाद कोई आश्वासन न मिलने से सरकार की मंशा को भांप गए। औपनिवेशिक सरकार का असली रूप धीरे-धीरे सामने आ रहा था।

गांधीजी ने सरकार के हिंसक स्वरूप का जवाब अहिंसा, सत्याग्रह से देने की रणनीति अपनाई।

- गांधीजी ने संघर्ष - विराम - संघर्ष की रणनीति अपनाई।

राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए किसान, मजदूर, दलित, महिलाएं सबके मुद्दों को सम्मिलित किया।

असहयोग आंदोलन (1920-22) चलाया
सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-32) चलाया

जब जनता अहिंसक व सत्याग्रह की तकनीक सीख गई तो भारत छोड़ो आंदोलन चलाया जिसमें जनता स्वयं ही नेता थी।

अतः भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन विभिन्न चरणों से गुजरते हुए परिपक्व हुआ। जिसने औपनिवेशिक सरकार की प्रकृति को धीरे-धीरे समझा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

16. The foundation of the Indian National Congress in 1885 was not a sudden accident but the culmination of a long process of political awakening. Comment. **(250 words) 15**

वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कोई अप्रत्याशित घटना नहीं थी, अपितु यह राजनीतिक चेतना की एक लंबी प्रक्रिया की पराकाष्ठा थी। टिप्पणी कीजिए।

दिसम्बर 1885 मे ए. ओ. ह्यूम के प्रयासो से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। यह क्रमिक विकास का निम्नानुसार उदाहरण था

1. 1838 में बंगाल के जमींदारो ने लैंड होल्डर्स सोसाइटी बनाई।

2. ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन का गठन दादाभाई नौरोजी व साथियो ने किया।

3. मद्रास महाजन सभा की स्थापना 1884 मे राघवाचार्य, सुब्रमण्यम अय्यर आदि ने की।

4. परमहंस मण्डली की स्थापना गोपाल हरिदेशमुख ने की।

5. इंडिया लीग की स्थापना शिशिर कुमार घोष ने की।

6. 1876 मे सबसे प्रबल संगठन इंडियन एसोसिएशन की स्थापना सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व आनन्दमोहन बोस ने की।

इस समय संपूर्ण भारत में संगठन स्थापित हो रहे थे। बंगाल सर्वाधिक सक्रिय प्रांत था। इंडियन एसोसिएशन सबसे बड़ा संगठन था जिसमें बंगाल से बाहर के भी सदस्य थे। इन्होंने अपने पहले अधिवेशन (1883) में

- सेना खर्च कम किया जाए
- भारतीयों को विधानमण्डलों में स्थान दिया जाए
- लगान कम किया जाए

जैसी मांगे रखी थी। किंतु सभी एक राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता महसूस कर रहे थे इसी क्रम में ए० ओ० ह्यूम के प्रस्ताव पर दिसम्बर 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई जिसमें उस समय के सभी सक्रिय राजनेता सदस्य बने।

कुछ विचारक इसे ह्यूम द्वारा भारतीय उथल-पुथल को शांत करने के लिए सेफ्टी वॉल्व की स्थापना बताते हैं।

वहीं कुछ राष्ट्रवादी इसे अंग्रेजी सरकार से बचाने के लिए तड़ित चालक के रूप में प्रयोग करने की बात करते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किंतु स्पष्ट है कि भारत में 1857 के बाद से राजनीतिक हलचल तेज होने लगी थी जिसके प्रयास विखण्डित हो रहे थे किंतु संचार व यातायात के साधनों से अखिल भारतीय संगठन का निर्माण और नजदीक आ गया था जो कांग्रेस बनकर उभरा। अतः यह क्रमिक विकास का परिणाम था।

17. Despite the Cripps' proposal being a step ahead of the August Offer, it was rejected by both the Congress and the Muslim League albeit for different reasons. Discuss. **(250 words) 15**

अगस्त प्रस्ताव से एक कदम आगे होने के बावजूद क्रिप्स प्रस्ताव को कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा अलग-अलग कारणों से अस्वीकार कर दिया गया। चर्चा कीजिए।

क्रिप्स प्रस्ताव 1942 में मित्र राष्ट्रों की द्वितीय विश्व युद्ध में कमजोर स्थिति की पृष्ठभूमि में आया था।

विशेषताएं - 1. भारत को डोमिनियन स्टेटस देना।

2. अल्पसंख्यकों के हितों का ध्यान रखा जाएगा।

3. युद्ध समाप्ति के बाद भारतीयों के सहयोग से सरकार बनाना आदि.

वस्तुत: अगस्त 1940 मे लिनलिथगो के समय एक प्रस्ताव रखा गया था जिसमें डोमिनियन स्टेटस का आश्वासन तथा अधिक उत्तरदायी सरकार की स्थापना का प्रस्ताव था

क्रिप्स प्रस्ताव इससे अगला कदम था

किंतु राष्ट्रवादी 1930 के लाहौर अधिवेशन मे ही स्पष्ट कर चुके थे कि पूर्ण स्वतंत्रता से कम हमें कुछ मंजूर नहीं है

अतः नेहरू ने क्रिप्स प्रस्ताव को 'टूटते हुए बैंक का पोस्टडेटेड चेक' कहते हुए आलोचना की।

स्टेफर्ड क्रिप्स भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक थे किंतु बाद में वे मुकर गए तथा केवल डोमिनियन स्टेटस का आश्वासन ही दे पाए अतः कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया।

मुस्लिम लीग व जिन्ना स्पष्ट पाकिस्तान से कम कुछ नहीं चाहते थे। अतः उन्हें भी यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं था। यद्यपि क्रिप्स प्रस्ताव ने विभाजन के संकेत दे दिए थे।

क्रिप्स प्रस्ताव की असफलता ने भारत में निराशा व असंतोष का माहौल पैदा कर दिया। जिससे भारत छोड़ो आंदोलन उठ खड़ा हुआ। जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े हिला दी और अगला प्रस्ताव कैबिनेट मिशन के रूप में आया जिसने संविधान सभा की घोषणा की।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अतः क्रिप्स प्रस्ताव कांग्रेस व मुस्लिम लीग के उद्देश्यों को पूर्ति न कर ब्रिटिश सरकार के हितों के अनुकूल था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

18. Though India as a whole had been ruled by some emperors in the past, it was only in the 19th century that the concept of national identity and national consciousness emerged. Examine. **(250 words) 15**

यद्यपि अतीत में कुछ सम्राटों का संपूर्ण भारत पर शासन रहा था, तथापि कहीं जाकर 19वीं शताब्दी में ही राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा उभरी। परीक्षण कीजिए।

मौर्यकाल से ही भारत बहुत बड़ी इकाई था किंतु इसमें अनेक विविधताएं व विभाजन मौजूद थे।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रवाद की अवधारणा सर्वप्रथम यूरोप में उभरी। पुनर्जागरण व प्रबोधन के रास्ते यूरोप मे राष्ट्र राज्यो का निर्माण हुआ।

इससे पहले राष्ट्रो की सीमाएं राजाओ की तलवार निर्धारित करती थी किंतु राष्ट्रवाद के बाद यह जनता की भावना निर्धारित करने लगी।

भारत में अशोक से लेकर औरंगजेब तक कई शासको ने संपूर्ण भारत पर शासन किया किंतु उपनिवेशवाद न होने के कारण आम जनता पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था। ब्रिटिश शासन में आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक व प्रशासनिक नीतियो ने आम भारतीयों को बता दिया

कि औपनिवेशिक शासन क्या होता है।

वहीं यूरोप में भी फ्रांसीसी क्रांति, व 1830 व 1848 की क्रांतियों ने पूरे विश्व में राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व का नारा प्रसारित कर दिया जिसे भारतीयो ने भी ग्रहण किया।

→ यातायात व संचार के साधनों के अभाव मे पूरे भारत में एक जुड़ाव का अभाव था जिनका विकास 19वीं सदी मे हुआ

→ ब्रिटिश सरकार ने शासन प्रणाली व प्रशासनिक व्यवस्था संपूर्ण भारत मे एकजैसी अपनाई।

→ शोषण के विरुद्ध आवाज के रूप में एक साथ उठ खड़े हुए। विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन राय ने प्रेरित किया

→ प्रेस व साहित्य की भूमिका।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्पष्ट है कि इन्ही कारणो के सम्मिलित प्रभावो से भारत में 19 वीं सदी में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

19. The Marathas had the potential to develop into a new pan-India empire replacing the Mughals, but that potential was never fully realized because of the nature of the Maratha polity itself. Discuss. **(250 words) 15**

मराठों में मुगलों को प्रतिस्थापित कर एक नए अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में विकसित होने की क्षमता थी, लेकिन स्वयं मराठा राजव्यवस्था की प्रकृति के कारण यह क्षमता कभी पूर्णतः साकार नहीं हो पाई। चर्चा कीजिए।

1707 ई. मे औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात ही मराठा दिल्ली सिंहासन की ओर देखने लगे थे किंतु निम्न कारणों से इसे पा न सके। -

⇒ मराठों मे एकता का अभाव था। वे चार वंशों में बंटे थे।

⇒ मूल रूप से इनका उद्भव लूटपाट व वसूली के संगठन के रूप मे हुआ था। उदा॰ राज॰ मे चौथ व सरदेशमुखी की वसूली।

⇒ 1761 मे अहमदशाह अब्दाली से पराजय से कभी उभर नहीं पाए।

⇒ अंग्रेज उस समय तक भारत मे पाँव जमा चुके थे जो अधिक आधुनिक व सुसज्जित थे।

⇒ मराठों में भारत राष्ट्र को अंग्रेजो के विरुद्ध लड़ने की दूरदर्शिता नहीं थी अतः वे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मैसूर व निजाम के विरुद्ध अंग्रेजो को सहायता देते रहे।

⇒ मराठों के पास वैधानिकता नहीं थी जिसे लेकर भारत के सभी भागो को एक कर सके। ना धर्म के आधार पर, ना प्रशासन के आधार पर।

⇒ 1764 मे बक्सर के युद्ध में अंग्रेजो ने मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को भी हराया था जिसके बाद भी उन्होने मुगलो को प्रतीकात्मक शासक बनाए रखा

⇒ पड़ोसी शक्तियो का सहयोग नहीं ले सके।

⇒ सैन्य शक्ति व नेतृत्व क्षमता का अभाव था

स्पष्ट है कि औरंगजेब के काल तक मराठा मुगलो से कमजोर थे बाद में, स्पष्ट योजना, उद्देश्य, संगठन व शक्ति के अभाव में दिल्ली सिंहासन तक पहुँचने मे देरी की तब तक लावारिस सत्ता को अंग्रेज हड़प चुके थे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

20. The Revolt of 1857 led not to the downfall but to the consolidation of British Empire in India. In this context, bring out the changes in administrative structure and policies introduced by the British post 1857.

(250 words) 15

1857 के विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के पतन का नहीं, अपितु समेकन का मार्ग प्रशस्त किया। इस संदर्भ में, 1857 के पश्चात् अंग्रेजों द्वारा प्रशासनिक संरचना और नीतियों में लाए गए परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए।

1857 का विद्रोह एक युगान्तरकारी घटना थी जिसमें शोषितो ने शोषको के विरुद्ध आवाज उठाई। इससे निम्न परिवर्तन हुए -

प्रशासनिक संरचना :-

1. ईस्ट इंडिया कंपनी से शासन का भार ब्रिटिश संसद ने अपने हाथ मे ले लिया

2. द्वैध शासन को समाप्त कर 15 सदस्यीय परिषद के साथ भारत सचिव का पद बनाया गया जो कैबिनट मंत्री होता था।

3. सेना - अंग्रेज सैनिको की संख्या बढ़ाई
- जातिगत भेदभाव को जगह दी
- विशेष पदो पर अंग्रेजो की नियुक्ति

4. 1861 मे सिविल सेवा परीक्षा को खुली प्रतियोगिता से लेना निश्चित किया

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

नीतियों में बदलाव :-

1. देशी रियासतों को हड़पने की बजाय सहयोग का आश्वासन।

2. 'बांटो व राज करो' की नीति के तहत हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य बढ़ाया।

3. विधानमण्डलों मे भारतीयों की नियुक्ति की व्यवस्था।

4. औद्योगिक मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया जो औपनिवेशिक हितों के अनुकूल एकतरफा था।

5. आर्थिक – विऔद्योगिकीकरण
 – कृषि का वाणिज्यीकरण
 – अर्थव्यवस्था का ग्रामीकरण

6. भारतीयों मे शिक्षा का प्रसार अधिक

स्पष्ट है कि 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार ने कंपनी से सुदृढ़ शासन व्यवस्था की नींव डाली जिससे 100 वर्ष तक शासन किया जा सका।